

ये अव्यक्त इशारे

अब लगन की अग्नि को प्रज्वलित कर  
योग को ज्वाला रूप बनाओ

**12-09-2025**

ज्वाला स्वरूप की स्थिति का अनुभव करने के लिए निरन्तर याद की ज्वाला प्रज्वलित रहे। इसकी सहज विधि है - सदा अपने को ‘‘सारथी और सक्षी’’ समझकर चलो। आत्मा इस रथ की सारथी है - यह स्मृति स्वतः ही इस रथ (देह) से वा किसी भी प्रकार के देह भान से न्यारा बना देती है। स्वयं को सारथी समझने से सर्व कर्मेन्द्रियाँ अपने कन्ट्रोल में रहती हैं। सूक्ष्म शक्तियाँ ‘‘मन-बुद्धि-संस्कार’’ भी आर्डर प्रमाण रहते हैं।

**Now ignite the fire of love and make  
your yoga volcanic.**

In order to experience the volcanic stage, keep the fire of your remembrance constantly ignited. The easy way to do this is constantly to consider yourself to be a charioteer and a detached observer. You, the soul, are the charioteer of your chariot. This awareness will detach you from your body and any type of body consciousness. By considering yourself to be a charioteer, you can control all your physical organs. Even your subtle powers of your mind, intellect and sanskaras remain in order.